विचार बिन्दु

दया चरित्र को सुन्दर बनाती है। –जेम्स एलन

कलाओं का मूल्य अब बाज़ार में उसके मोल से होता है

कलाओं की वर्तमान गतिविधियां कई प्रचलित धारणाओं को चुनौती देने लगी हैं। ऐसा लगता है जैसे कला कोई वस्तु या किन्हीं प्रथाओं का समूह हो गई हो। बाज़ार आश्रित लोकप्रिय मीडिया ललित कलाओं के बीच विषयगत आधार पर कोई स्पष्ट विभाजन स्थापित नहीं कर पा रहा है। इसके अलावा कलाकार क्या है, या ललित कला की भूमिका क्या हो सकती है, इस बारे में भी लोगों के विचार लगातार बदलते रहे हैं। औपचारिक कौशल के प्रदर्शन के साथ-साथ सुंदरता, सामंजस्य और अनुपात की शास्त्रीय धारणाएं भी काफी हद तक तिरोहित हो गई हैं। कम से कम, अब कलाकृति बनाने के लिए उन शास्त्रीय धारणाओं की आवश्यकता नहीं रही है। कोमल भावनाओं, धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों के चित्रांकन जैसी पुरानी परिचित शैलियां वर्तमान अभिव्यक्तियों में अनुपस्थित मिलती हैं। यूं भी कह सकते हैं कि वे विशेषताएं जो ललित कला को लंबे समय तक सामान्य वस्तुओं या जन माध्यमों से अलग बनाती थीं, अब निर्णायक नहीं रह गई हैं। वैसे ही जैसे अब विशेष सामग्रियों का उपयोग, विशेष प्रकार की कल्पना और उच्च मूल्यों की आकांक्षा नहीं रही। कला जगत में कला के मूल्य की परिभाषा हमेशा से एक विवादित विषय रहा है। ऐसा शायद इसलिए होता रहा है क्योंकि कला मूल्य के असंख्य तत्त्व होते हैं और वे अक्सर सर्वानुभवजन्य (ऑब्जेक्टिव) होने के बजाय व्यक्तिपरक (सब्जेक्टिव) होते हैं। सवाल उठता है कि वह क्या चीज है जो कला को मूल्यवान बनाती है? क्या इसका संबंध केवल उसकी मुद्रा में कीमत से हो सकता है? क्या मुद्रा में कीमत किसी कला की प्रतीकात्मक प्रकृति या इसकी सामग्री की सुंदरता को व्यक्त कर सकती है? भारत में कीमत से कला को आंकने की परंपरा रही है। भले ही बाज़ार की विनिमय व्यवस्था में हम उसे न देख पाएं हों और जीवन में उसकी उपयोगिता के संदर्भ में ही देखने के आदि रहे हों, किन्तु लोक स्मृतियों में कला का मूल्य उससे मिलने वाली संपदा से ही निर्धारित होता आया है। अमुक के दोहे पर, अमुक के कला शिल्प पर, यहां तक कि अमुक की हाज़िर जवाबी की अमूर्त कला पर प्रसन्न होकर किसी सामंत द्वारा धन धान्य का उपहार देना भी उस कला और कलाकार की कीमत को मान्यता देना ही रहा है। तो क्या किसी कला को उससे मिल सकने वाली संपत्ति से मान्यता मिलती है? नये ज़माने के बाज़ार में कला की कीमत उसके अनोखेपन से भी लगाई जाने लगी है। वास्तव में कला का अलग ही बाजार बन गया है, जिसका अपना गतिविज्ञान है, जिसका अपना अर्थशास्त्र है और जो पूंजीवादी नियमों और प्रक्रियाओं के आधार पर चलता है। हालांकि कला के समग्र अर्थ को लेकर अनगिनत बहसें हैं लेकिन उसके आंतरिक मूल्य की परिभाषा कुछ ऐसी है जो व्यक्ति से संबंधित ही है। उसका कला के परिवेश की विशिष्टता, अपूरणीयता और पवित्र आभा से भी कुछ लेना-देना जरूर होता है। ललित कला किसी बीमारी का इलाज नहीं करती, वह सड़कें नहीं बनाती, या गरीबों के लिए लंगर नहीं चलाती। इसीलिए कला के मूल्य को समझने के लिए अध्येता लोग इतिहास में कला को कैसे महत्व दिया गया है उसे देखते हैं और यह विचार करते हैं कि आज यह कितनी मूल्यवान है महत्वपूर्ण है। कला रचनात्मकता की एक अनूठी मानवीय अभिव्यक्ति है। यह हमें अपने अतीत, हमसे अलग लोगों और अंततः खुद को समझने में मदद करती है। शायद इसीलिए जानकार लोग कहते हैं कि कला और संस्कृति के मूल्य के बारे में कोई भी बात उसकी आंतरिकता से शुरू की जानी चाहिए और जानने की कोशिश की जानी चाहिये कि वह हमारे आंतरिक जीवन में कैसे उजास भरती है और हमारी भावनात्मक दुनिया को समृद्ध करती है। यही वह चीज है जिसे हम संजोते हैं। किसी ने सही कहा है कि हमारे पुस्तकालयों, संग्रहालयों, थिएटरों और दीर्घाओं के सामूहिक संसाधनों के बिना, या साहित्य, संगीत और कला की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के बिना, जीवन ठहरा हुआ और बांझ होगा। अतीत के बारे में कोई रचनात्मक तर्क नहीं हों, कोई विविधतापूर्ण और उत्तेजक वर्तमान नहीं हो और भविष्य के कोई सपने नहीं हों तो जीवन कितना रूखा होगा, समझा जा सकता है।

किसी कला का असली बाज़ार मूल्य अब मुख्य रूप से दीर्घाओं और नीलामी घरों द्वारा निर्धारित किया जाने लगा है। वहां बनने वाली सहमति किसी कलाकृति या कलाकार के लिए मूल्य निर्धारण के लिए आधार होती है, जो बाज़ार में नई कृतियों या फिर से बेची जाने वाली कृतियों की कीमत तय करने में मदद करती है।

कला का अंतर्निहित मूल्य, बेशक, आंशिक रूप सेएक दार्शनिक कथन है जिसे संख्याओं में नहीं मापा जा सकता। यह एक अत्यधिक व्यक्तिपरक भावनात्मक मूल्य है, जो इस बात से जुड़ा है कि कला का कोई विशिष्ट कार्य दर्शक को कैसा महसूस कराता है, यह किस तरह की संवेदनाओं को उभारता है? निश्चित रूप से, इसे आंका नहीं जा सकता है। यह मूल्य सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, शिक्षा और व्यक्तिगत जीवन के अनुभव पर निर्भर भी निर्भर करता है। इस मूल्य को उसके निर्माण में उपयोग की जाने वाली सामग्रियों से स्वतंत्र माना गया है। कला मूल्य का एक अन्य प्रासंगिक तत्त्व उसका सामाजिक अर्थ भी होता है। कला वास्तव में संचार का एक साधन है, क्योंकि यह विचारों, मूल्यों, भावनाओं, अवधारणाओं का प्रेषण करती हैं, जिन्हें प्रत्येक पर्यवेक्षक अलग-अलग तरीके से प्राप्त कर सकता है। कला समाज और मानव स्थिति से संबंधित विचारों को भी प्रसारित करती है। कला की रचना करते समय, एक कलाकार कोई कहानी, कोई भावना, या किन्हीं सांस्कृतिक तत्त्वों का साझा करता है। वह अपनी कहानियों, भावनाओं और संस्कृतियों को अपनी कलाओं में प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत हो जाने के बाद लोग अपने-अपने नजरिए से उनकी रचनाओं को देखते हैं और समझते हैं। रचनाकार खुद भी कई बार अपनी रचनाओं को निर्मित हो जाने के बाद नई दृष्टि से उसे समझते हैं। इसके अलावा, कला का सामाजिक मूल्य उसकी सामुदायिक अनुभव के लिये व्यक्तियों को समेकित करने की क्षमता भी होती है। कला के समग्र अर्थ के बारे में अनगिनत बहसें हैं। मूल्य की परिभाषा कुछ ऐसी है जो व्यक्ति से संबंधित होती है। वर्तमान पूंजी आधारित अर्थव्यवस्था में कला मूल्य का मुख्य तत्त्व बाजार में उसका मोल बन गया है। सरल शब्दों में कहें तो बाज़ार में लगने वाला मोल ही अब किसी कलाकृति के मूल्यवान होने के स्तर का निर्धारण करता है। किसी कलाकृति की कीमत उपयोगितावादी वस्तुओं की तरह निर्धारित नहीं होती है। उसका वाणिज्यिक मूल्य, वास्तव में, कुछ सामूहिक सहमति के अनुसार निर्धारित होता है, बिल्कुल मुद्रा की तरह। कला के दो अलग-अलग बाज़ार होते हैं जहां विनिमय होता है। प्राथमिक बाज़ार, कलाकार के हाथों से उसके पहले खरीदार तक का होता है,जहां रचना की कीमत मुख्य रूप से कलाकार और उससे सौदा करने वाले द्वारा तय की जाती है। बाद में किसी कलाकृति की कीमत अनिवार्य रूप से बाज़ार के मांग और आपूर्ति के सिद्धांत का पालन करती है। किसी कला का असली बाज़ार मूल्य अब मुख्य रूप से दीर्घाओं और नीलामी घरों द्वारा निर्धारित किया जाने लगा है। वहां बनने वाली सहमति किसी कलाकृति या कलाकार के लिए मूल्य निर्धारण के लिए आधार होती है, जो बाज़ार में नई कृतियों या फिर से बेची जाने वाली कृतियों की कीमत तय करने में मदद करती है। इस प्रक्रिया में कई चीजें शामिल हैं:–उनमें से एक है कलाकृति के निर्माण का संदर्भ। यह या तो ऐतिहासिक महत्व का हो सकता है या इतिहास के विकास में इसका एक निश्चित अर्थ हो सकता है। कला के बाज़ार मोल का एक अन्य आवश्यक तत्व है होता है उसका उद्गम। इसका अर्थ है द्वितीयक बाजार में प्रवेश करने के बाद कलाकृति के स्वामित्व का इतिहास। यदि कलाकृति का पिछला मालिक कोई प्रसिद्ध संग्रहकर्ता था, तो यह जानकारी आगे बिक्री में निश्चित रूप से अनदेखी नहीं होती। यदि कलाकृति किसी संग्रहालय की है, तो उससे उसके मूल्य को अविश्वसनीय बढ़ोतरी मिलती है। इतना ही नहीं कि वे अधिकांश समय बाज़ार से बाहर रहती हैं। इसका प्रभाव उसकी दुर्लभता और मांग और आपूर्ति के तंत्र पर भी पड़ता है। किसी विशिष्ट कलाकार की जितनी अधिक कलाकृतियां सार्वजनिक संग्रहालयों में होंगी, उतनी ही कम कलाकृतियां बिक्री के लिए उपलब्ध होंगी, इसलिए, बिक्री के लिए ऐसी कृतियों का मूल्य उतना ही अधिक होगा। बाजार उन स्थितियों को भी ध्यान में रखता है जिनमें कलाकृति को संरक्षित किया गया है। इसका मूल्यांकन विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है और यह अवधि तथा रुचि के अनुसार बदलता भी रहता है। फिर भी इसमें सर्वोपरि कारक कलाकृति की प्रामाणिकता होता है, जिसका तकनीकी रूप से मूल्यांकन किया जाता है। हालांकि विद्वान अपनी समीक्षाओं में व्यक्तिपरकता को हटा देते हैं और शैली तथा युग के कारकों से स्वतंत्र निर्णय देते हैं। किन्तु कला के मूल्य निर्धारण में उसका विषय भी कभी-कभी कीमत पर प्रभाव डालता है। ऐसा माना जाता है कि महिला विषय औसतन पुरुषों की तुलना में बेहतर बिकते हैं। बाजार कलाकार के नाम को भी अत्यधिक महत्व देता है। इसलिए बाज़ार में नाम पाने के लिए भी अनेक प्रपंच रचे जाते हैं। कला के बारे में बात करते समय यह सवाल भी उठ सकता है कि हमें इसकी परवाह क्यों करनी चाहिए? वर्तमान युग में कला को उन लोगों का स्वार्थी शगल भी मान कर खारिज भी किया जाता है जिनके पास बहुत अधिक समय है। यह भी कहा जाता है कि भारत में कला लोक मनोरंजन का हेतु नहीं रही बल्कि आत्मरंजन का सबब रही है। भारत ने ही दुनिया को बताया कि कला की कोई कीमत नहीं होती। कलाकार की कीमत लगाओ। कला और कलाकार का सम्मान करो। उनका दायित्व लो। भारतीय परंपरा कलाकारों को भेंट देने की रही है, टिकट लगा कर धंधा करने की नहीं।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

"धरती धोरां री...." अमर गीत के रचयिता कन्हैयालाल सेठिया

जन्मदिन (11 सितम्बर) के अवसर पर विशेष

रावेल पुष्प

हमारा देश स्वतंत्रता से पूर्व कई रियासतों में बंटा हुआ था, उन्हीं में से लोह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल ने 1949 में कुछ रियासतों को मिलाकर बनाया था- राजस्थान!

अंग्रेजों ने इन क्षेत्रों का नाम राजपूताना दिया था लेकिन अंग्रेजी लेखक इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड ने एक ग्रंथ लिखा था- **'अनाल्स एंड एंटीक्विटीज आफ राजस्थान'**

जेम्स टॉड ने सबसे पहले इस क्षेत्र को राजस्थान के नाम से अलंकृत किया था और स्वाधीनता के बाद भी इस नाम को ही स्वीकृति मिली थी। जिस तरह जेम्स टॉड का नाम राजस्थान के साथ बड़े सम्मान से जुड़ा हुआ है, उसी तरह आज के राजस्थान के साथ जो नाम बड़े आदर से जुड़े हुए हैं उनमें से एक नाम है– कन्हैयालाल सेठिया! उनका जन्म भले ही 11 सितम्बर 1919 को राजस्थान में हुआ था, लेकिन प्रारंभिक शिक्षा इसी कोलकाता में हुई थी। 1942 में जब महात्मा गांधी का करो या मरो का नारा बुलंद हुआ था, तो वे भी देश सेवा में लग गए थे, भले ही इसके लिए उनकी पढ़ाई बाधित हो गई थी। उनके अंदर अंग्रेजी दासता से मुक्ति की आग बड़ी प्रबल थी। उन्हें लक्ष्मी के साथ सरस्वती का भी आशीर्वाद प्राप्त था और कविता के सारे गुण मौजूद थे तो उन्होंने काव्य पंक्तियों की झंकार से रच डाली – **अग्नि वीणा!**

अग्निवीणा की रचनाओं में स्वाधीनता की अलख जगाने के सारे तत्व मौजूद थे, जिसके कारण अंग्रेजी सरकार ने उन पर राजद्रोह का मुकदमा दायर कर दिया। स्वाधीनता के बाद राजस्थान सरकार ने उन्हें स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा दिया लेकिन उन्होंने सरकार से किसी भी तरह का आर्थिक या फिर किसी किस्म का और लाभ नहीं लिया। उनके स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लिखी कविताओं के लिए उन्हें युग- चारण कवि के रूप में पहचान मिली। उनकी अग्निवीणा से ही ऐसी एक रचना की बानगी देखें, जहां क्रांतिमय चेतना का उद्घाटन हुआ है। परिस्थितियों के परिवर्तन के लिए रणबाँकुरों को उन्होंने ललकारा है –

किन घड़ियों में बैसुध सोये,
मारवाड़ के पूत,
पराधीन तुम देश तुम्हारा,
ओ बांके राजपूत।
अग्निवीणा झनझना दो
आज ताण्डव नृत्य होगा
हिल उठे प्राण कवि के
आज भीषण कृत्य होगा।

सेठिया जी ने राजाशाही और अंग्रेजी हुकूमत के अन्याय, अत्याचार और शोषण के विरुद्ध में प्रतीकात्मक रूप में अपनी कविताओं और गीतों का सृजन किया। 'महामरण की बेला में' कविता में आज़ादी के प्रखर स्वर हैं। अंग्रेजों की दमन नीति के आगे भारतीय वीर घुटने टेकने वाले नहीं है। उन्हें देश की स्वतंत्रता के महा-रण में जेलें भी उनके उत्साह और गति को अवरुद्ध नहीं कर सकती।

कफ़न बाँधकर आज खड़े हम
कातिल अपना बल अजमा लो
हम न हटेंगे एक कदम भी
चाहे जितने जुल्म ढहा लो
आज हमारी रग-रग में
महालय की बिजली दौड़ी
अब न अधिक अन्याय सहेंगे,
हमने युग की रासें मोड़ी।
(अग्निवीणा)

गौरतलब है कि बंगाल के विद्रोही कवि नज़रुल इस्लाम की देशभक्ति पूर्ण रचनाओं का पहला संकलन भी अग्निवीणा के नाम से ही प्रकाशित हुआ था, जिसकी हुंकार भरी कविताओं के कारण उन्हें विद्रोही कवि के रूप में जाना पहचाना जाता है। उनकी विद्रोही कविता की कुछ आखिरी पंक्तियां यों थी –

संघर्षों से थककर, मैं महान विद्रोही,
तभी शांति से विश्राम करूंगा
जब मैं
आकाश और हवा को उत्पीड़ितों की करुण कराहों से मुक्त पाऊंगा।
जब युद्ध के मैदानों से खनकती खूनी तलवारें हट जाएंगी, तभी
संघर्षों से थककर, मैं शांति से विश्राम करूंगा,
मैं शाश्वत विद्रोही हूं,
मैं इस दुनिया से परे अपना सिर उठाता हूं और,
ऊँचा, सदैव सीधा और अकेला!

कन्हैया लाल सेठिया जी की रचनाओं के 14 संकलन राजस्थानी में जहां प्रकाशित हुए, हिंदी में 18 और उर्दू में 2 संकलन प्रकाशित हैं। उनकी शुरुआत की राजस्थानी कविताओं में रमणीयां रा सोरठा माना जाता है। इसके अलावा नीमड़ो राजस्थानी की एक लघु पुस्तिका भी है। उनकी रचनाओं का देश की विभिन्न भाषाओं में तथा विदेशी भाषा में भी अनुवाद हो चुका है। उनकी 1962 चीन युद्ध के दौरान हिंदी कृति प्रतिबिंब का प्रकाशन हुआ तो फिर उसका अंग्रेजी अनुवाद भी हुआ, जिसकी भूमिका हरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय ने लिखी थी। उनकी रचनाओं का चार खण्डों में संकलन कोलकाता के राजस्थान परिषद् ने जुगल किशोर जैथलिया जी के संपादन में निकाला था।

उन्हें मिलने वाले सम्मान और पुरस्कारों की फ़ेहरिस्त तो काफ़ी लंबी है, लेकिन फिर भी कुछ का जिक्र तो किया ही जा सकता है मसलन– राजस्थानी काव्य कृति लीलटांसपर साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा राजस्थानी भाषा की सर्वश्रेष्ठ कृति के रूप में पुरस्कृत, विवेक संस्थान कोलकाता द्वारा उत्कृष्ट साहित्य सृजन के लिए पूनम चंद्र भदोरिया सम्मान, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा साहित्य वचनस्पति की उपाधि, हिंदी काव्य कृति निर्गंध पर भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली द्वारा मूर्ति देवी साहित्य पुरस्कार, भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से अलंकृत तथा साहित्यिक पत्रिका मधुमती द्वारा उन पर एक विशेषांक प्रकाशित किया गया। उनकी राजस्थानी की उत्कृष्ट कविताओं के लिए उन्हें कौन नहीं जानता, इसलिए उन्हें राजस्थानी का भीष्म पितामह भी कहा जाता है।

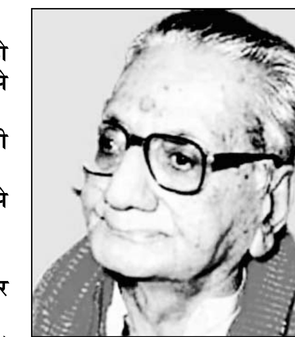

कन्हैयालाल सेठिया

किसी भी लेखक या कवि की कोई एक रचना उसकी पहचान बन जाती है और वो एक रचना ही उसे अमर कर देती है, जैसे 'उसने कहा था' कहानी के लिए गुलेरी जी, वंदे मातरम के लिए बंकिम चंद्र, सारे जहां से अच्छा के लिए इकबाल, उसी तरह धरती धोरां री कविता ने कन्हैयालाल सेठिया जी को अमरता ही प्रदान कर दी और इसकी पंक्तियां तो राजस्थान की पहचान बन गई हैं। धरती धोरां री की कुछ पंक्तियां काबिले- गौर हैं –

धरती धोरां री,
आ तो सुरगां नै सरमावै,
ई पर देव रमण नै आवै,
ई रो जस नर नारी गावै,
धरती धोरां री!
सूरज कण कण नै चमकावै,
चन्दो इमरत रस बरसावै,
तारा निछरावळ कर ज्यावै,
धरती धोरां री !
काळा बादळिया घहरावै,
बिरखा घूघरिया घमकावै,
बिजळी डरती ओला खावै,
धरती धोरां री!
जिसका आखिरी बंद है-
ई रै सत री आण निभावां,
ई रै पत नै नही लजावां,
ई नै माथो भेंट चढ़ावां,
मायड़ कोड़ां री,
धरती धोरां री !

श्री सेठिया जी का यह अमर गीत देश के कण-कण में गूंजने लगा, हर सभागार में धूम मचाने लगा, घर-घर में गाये जाने लगा। स्कूल-कॉलेजों के पाठ्यक्रमों में इनके लिखे गीत पढ़ाये जाने लगे, जिसने पढ़ा वह दंग रह गया, कुछ साहित्यकारों की संकुचित सोच को झटका लगा, जो यह मानते थे कि श्री कन्हैयालाल सेठिया सिर्फ राजस्थानी कवि हैं, इनके प्रकाशित काव्य संग्रह ने यह साबित कर दिखाया कि श्री सेठीया जी सिर्फ राजस्थान के ही नहीं पूरे देश के कवि हैं। सेठिया जी ने उस दौर में लेखकों को भी उद्देश्य परक रचनाओं का सृजन करने की प्रेरणा दी थी –

रचना वा जिणमें दीखै
सिरजणिये री दीठ
नहीं सो बोझो संबंध रो
लद मत कागद पीठ

युद्ध के समय सेठिया जी ने कवियों को ये सलाह भी दे डाली–

भर न सकेगी आज देश में
कवि केवल कविताई
वाक शूर अब बनना होगा
तुम्हें चंद बरदाई
एक हाथ में कलम
अपर में अब बंदूक संभालो
आप शब्द की तरह गोलियां
तुम सीसे में ढालो।

प्रसिद्ध इतिहासकार डॉक्टर सुनीति कुमार चटर्जी ने राजस्थानी साहित्य पर अपनी एक महत्वपूर्ण टिप्पणी की थी–

राजस्थान माता की यदि मूर्ति बनाई जाए तो उसके एक हाथ में तलवार और दूसरे में वीणा देना उपयुक्त होगा। राजस्थान अपने वीरों की शूरता से जितना गौरवान्वित था, अपने साहित्य से उससे कहीं कम गौरवान्वित नहीं। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने राजस्थान के वीर रस से पगे कवित्त और दोहों को सुनकर राजस्थान रिसर्च सोसायटी के एक जलसे की सदारत करते हुए कहा था– राजस्थान ने अपने रक्त से जिस साहित्य का निर्माण किया है, उसके जोड़ का साहित्य और कहीं नहीं मिलता। कन्हैया लाल सेठिया का धरती धोरां री गीत तो राजस्थान का वंदना गीत बन चुका है और राजस्थान की समृद्ध साहित्यिक, सांस्कृतिक विरासत में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका है और इसने देश-दुनिया में निःसंदेह अपना परचम तो लहराया ही है।

–रावेल पुष्प,
वरिष्ठ पत्रकार

देवली में आधा दर्जन से अधिक जर्जर भवनों से हादसा होने की आशंका

पालिका प्रशासन को जानकारी होने के बाद भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है

देवली, (निसं)। देवली में आधा दर्जन से अधिक जर्जर भवन हादसों को न्यौता दे रहे हैं। पालिका प्रशासन को जानकारी होने के बाद भी प्रशासन इस और ध्यान नहीं दे रहा है। शहर में कई दशकों से निजी भवन जर्जर एवं खंडहर अवस्था में तब्दील हो चुके हैं। इन दिनों हो रही लगातार बारिश के बीच यह जर्जर खंडहर भवन घनी आबादी के बीच खड़े हुए आमजन के लिए खतरे को न्योता दे रहे हैं। वहीं जर्जर अवस्था में पड़े भवनों के करीब रहने वाले लोगों के बीच हमेशा खतरा मंडराता रहता है।

ऐसे भवनों के इर्द-गिर्द रहने वाले लोगों से जानकारी मिली है कि शहर में लगभग आधा दर्जन से ऊपर भवन जर्जर खंडहर अवस्था में पड़े हैं। इनमें देखरेख और मरम्मत का अभाव बना हुआ है। यह कभी भी आमजन को गंभीर चोट पहुंचा सकते हैं। ऐसे ही हालात अभी हाल ही में एक सप्ताह पहले वार्ड नंबर 6 में देखे गए थे। यहां दो बड़े भवन जहाजपुर वाले शंकरलाल और सेठ बालूराम के मकान के नाम से प्रसिद्ध है, जो बुरी तरह खंडहर में तब्दील जर्जर अवस्था में है। इनमें से जहाजपुर वाले शंकर लाल का क्षतिग्रस्त भवन अभी हाल ही में 15 दिन पहले संध्याकाल के समय धरधराकर माल मोहल्ला गली में गिर गया था। गनीमत रही कि उक्त दौरान किसी को कोई जान माल का नुकसान नहीं पहुंचा। इसी प्रकार एक सप्ताह पहले सेठ बालू राम के जर्जर मकान (डूंडा) का एक हिस्सा बारिश के कारण वार्ड नंबर 6 के खटीक मौहल्ले के मार्ग पर आकर गिर गया था। यहां भी उक्त हादसे से मौजूदा लोग बाल-बाल बच गए थे। लोगों ने बताया कि घटना कि सूचना पालिका प्रशासन को पहुंचाई गई थी लेकिन फिर भी पालिका प्रशासन ऐसे हालातों के प्रति सक्रिय नहीं हो सका। तभी से आज तक पड़ोस में रहने वालों के बीच उक्त भवन को लेकर भय बना हुआ है।

देवली शहर के बीचों-बीच जर्जर अवस्था में खड़े भवन हादसे को न्यौता दे रहे हैं।

बावजूद इसके पालिका प्रशासन ने उक्त जर्जर अवस्था में पड़े मकान मालिक को कब सूचित किया या नोटिस जारी किया, इस जानकारी का अभाव भी बना हुआ है। ऐसे खंडहर जर्जर भवनों पर चर्चाओं के बीच जानकारी यह भी सामने आई है कि उक्त खंडहर भवनों में से सेठ बालूराम नामक भवन का बेचान हो कर नामांतरण नितिन प्रतिहार अभिषेक मंगल के नाम पर पालिका में इंद्राज होना बताया जा रहा है।

इसी प्रकार छतरी चौराहे पर भी बी बी एस फर्म का एक भवन जर्जर अवस्था में खड़ा हुआ है, जो मुख्य मार्ग से निकलने वाले राहगीरों को कभी भी गंभीर हादसे का शिकार बना सकता है। इसके अलावा शहर में अन्य स्थानों पर भी ऐसे कई भवन जर्जर और खंडहर अवस्था में खडे होकर गंभीर दुर्घटना को न्योता दे रहे हैं। जब पालिका अधिशासी अधिकारी पवन कुमार शर्मा से बात करने के लिए फोन लगाया तो उन्होंने फोन को रिसीव नहीं किया।

मनोज कुमार मीणा, उपखंड अधिकारी, देवली का कहना है कि पालिका अधिशासी अधिकारी को फोन रिसीव करना चाहिए। इस मामले में बात करते हैं। शहर में खंडहर एवं जर्जर अवस्था के भवनों पर पालिका से नियम अनुसार कार्यवाही कार्रवाई जाएगी।

पिंजरे में कैद हुआ लेपर्ड

डूंगरपुर, (निसं)। आंतरी वन क्षेत्र के बोरखेड़ गांव में एक लेपर्ड पिंजरे में कैद हो गया। लेपर्ड दो दिन पहले बकरी के शिकार के बाद उसे खाने के लिए आया था और पिंजरे में फंस गया। लेपर्ड के रेस्क्यू के बाद गांव के लोग इकट्ठे हो गए। वन विभाग की टीम ने लेपर्ड को रेस्क्यू कर वापस सुरक्षित वन क्षेत्र में छोड़ दिया।

आंतरी वन क्षेत्र में पिछले कुछ दिनों से लेपर्ड दिखाई देने के बाद लोग डर के जी रहे थे। पारडा मेहता पंचायत के बोरखेड़ गांव में दो दिन पहले राजमल परमार के घर के बाहर बंधी बकरी को लेपर्ड उठा ले गया था। ग्रामीणों ने बकरी को लेपर्ड के शिकंजे से छुड़ाने के लिए पीछा भी किया, लेकिन लोग उसे नहीं ढूंढ पाए। सूचना पर वन विभाग की टीम आंतरी फॉरेस्ट रेंज से पहुंची थी और तलाशी अभियान के दौरान राजमल के घर से कुछ दूर बकरी का शव पड़ा मिला था। गांव में लेपर्ड के घूमने से लोग डरे हुए थे। ऐसे में कोई भी जंगल की ओर नहीं जा रहा था। वहीं, ग्रामीण अपने पशु भी रात को घरों में बांध रहे थे। ग्रामीणों के डर को देखते हुए वन विभाग ने गांव में ही एक पिंजरा लगाया था और उसमें मृत बकरी का शव रख दिया था। देर रात लेपर्ड बकरी के शव को खाने की कोशिश में पिंजरे में कैद हो गया। इसके बाद उसके दहाड़ने की आवाज आने लगी, लेकिन डर के कारण रात को कोई भी घर से बाहर नहीं निकला। ग्रामीणों ने मंगलवार सुबह वन विभाग को लेपर्ड के पिंजरे में कैद होने की सूचना दी। सूचना पर वन विभाग की टीम भी पहुंची और पिंजरे को लेकर रवाना हो गई। लेपर्ड को वन क्षेत्र में छोड़ दिया गया।

■ लेपर्ड दो दिन पहले बकरी के शिकार के बाद उसे खाने के लिए आया था

राशिफल

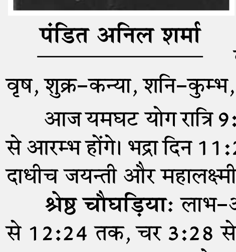

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 11 सितम्बर, 2024

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, ज्येष्ठा नक्षत्र रात्रि 9:22 तक, प्रीति योग रात्रि 11:55 तक, विष्टि करण दिन 11:29 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 9:22 से धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मिथुन, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-कन्या, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज यमघट योग रात्रि 9:22 से सूर्योदय तक है। रवियोग रात्रि 9:22 से आरम्भ होंगे। भद्रा दिन 11:29 तक रहेगी। आज दुर्गाष्टमी, राधाष्टमी, श्री दाधीच जयन्ती और महालक्ष्मी व्रत आरम्भ होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:19 तक, शुभ 10:31 से 12:24 तक, चर 3:28 से 5:00 तक, लाभ 5:00 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:14, सूर्यास्त 6:33

मेष
परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में वाद-विवाद बढ़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

वृष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मिथुन
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक यात्रा संभव है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

कर्क
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

कन्या
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
आर्थिक/वित्तिय मामलों में संतुलन बना रहेगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। व्यक्तिगत कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
आज अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा।

मकर
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।